# निपुण भारत मिशन के क्रियान्वनय की वस्तु स्थिति : एक अध्ययन

**Nipun Bharat Mission Ke Kriyanvayan Ki Vastusthiti : Ek Adhyayan**

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

## शिक्षा शास्त्र विषय की शोध उपाधि समिति की बैठक दिनांक 03 अप्रैल 2024 के निर्देशानुसार संशोधित शोध प्रस्ताव

## सत्र 2023


शोध निदेशक

26-08-2025

डॉ0 पी0के0 स्टालिन
निदेशक
विद्या शाखा
विषय– शिक्षाशास्त्र

प्रस्तुतकर्ता

गौतम कुमार
(नेट) विद्या शाखा
Enroll. No.-2900903
विषय– शिक्षाशास्त्र


(अग्रसारित करने वाले सक्षम अधिकारी की मोहर एवं दिनांक सहित हस्ताक्षर)


**शिक्षा विद्या शाखा**

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज

# School of EDUCATION

## Certificate

I hereby declare that the short synopsis " ------Research Topic NIPUN BHARAT MISSION KE KRIYANVAYAN KI VASTUSTHITI: EK ADHYAYAN being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in(---Subject---) EDUCATION under school of (-------) EDUCATION of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / Dr. ------------- and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

(Signature)
(Name of Candidate)
(En. No.)
2300903

26.05.2025
Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
(Signature)
(Name ) P.K. Astalin.
Faculty of (Subject ---) School of Education.

26.05.2025
(Signature)
(Name ) P.K. Astalin
**(Director of Concerned School of Studies)**

26/05/25
(Signature)
(Name ) P. K. Pandey.
**(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)**

# ''निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तु स्थिति : एक अध्ययन''
## (Nipun Bharat Mission Ke Kriyanvayan Ki Vastusthiti : Ek Adhyayan)

**सारांश (Abstract)** : बुनियादी शिक्षा सभी प्रकार की शिक्षा की नींव होती है। यह आगे की शिक्षा का आधार तैयार करती है, जिस पर आगे की शिक्षा की ईमारत तैयार होती है। इसके लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान जरूरी है। इसी को ध्यान में रखते हुए एन0ई0पी0 2020 में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को मजबूत बनाने हेतु एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित करने की बात की, इसी सन्दर्भ में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 5 जुलाई 2021 को निपुण भारत मिशन नाम से एक राष्ट्रीय स्तर पर मिशन की शुरूआत किया गया। जिसमें बाल वाटिका से कक्षा 2 तक के तीन से आठ वर्ष के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्रदान करना इसमें प्रत्येक बच्चा समझ और संख्या के साथ पढ़ने की दक्षता हासिल करें, इसमें बच्चों में ड्राप आउट को कम करना, शिक्षा प्रणाली में सुधार लाना, छात्रों को आनन्दपूर्ण सिखने हेतु प्रोत्साहित करना, तथा पढ़ने–लिखने, गणना में कुशल बनाना है। निपुण भारत के क्रियान्वयन को विभिन्न स्तर पर देखना तथा इसके क्रियान्वयन में आने वाले विभिन्न समस्याओं को देखकर उचित सुझाव देना ताकि निपुण लक्ष्य को सत् प्रतिशत प्राप्त किया जा सके और बुनियादी शिक्षा को मजबूत बनाया जा सके।

**की–वर्ड (Keyword) : निपुण, बुनियादी शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और अंक गणित ज्ञान, राष्ट्रीय मिशन, एन0ई0पी0 2020, बाल वाटिका, ड्राप आउट।**

# ''निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तु स्थिति : एक अध्ययन''
**(Nipun Bharat Mission Ke Kriyanvayan Ki Vastusthiti : Ek Adhyayan)**

**प्रस्तावना–**

एक आदर्श और कल्याणकारी समाज तथा भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए जरूरी है। उसके लिए शिक्षा पर विशेष ध्यान दिये बिना संभव नहीं है। आदर्श सदस्य के व्यक्तित्व का विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है शिक्षा व्यक्ति गुणों की पहचान, परिपक्वता व पूर्णताप्रदान करती है। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो मनुष्य के अनुभव द्वारा प्राप्त होत है व उसके पथ–प्रदर्शक बनते हैं।

विवेकानन्द के अनुसार–''शिक्षा व्यक्ति में अन्तर्निहित पूर्णता का विकास है।''

डॉन डी0वी0 के अनुसार–'' शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है।''

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ, नवीन भारत ने अपने संविधान में समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय के साथ व्यक्ति की गरिमा को सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा इसकी पूर्ति के लिए ''शिक्षा'' के अलावा दूसरा रास्ता नहीं था, जनगणना 1950–51 साक्षरता दर 18.33% थी जो लोकतंत्र के लिए बाधक है। एक लोकतंत्रात्मक समाज व विकसित भारत बनाने हेतु शिक्षा की बुनियाद प्राथमिक शिक्षा है, जिस पर आगे की शिक्षा का महल तैयार होता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु करतूरी रंगन कमेटी द्वारा 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' प्रस्तुत किया जिसमें बताया कि (5+3+3+4) प्लान प्रस्तुत किया जिसमें मुख्यतः मूलभूत साक्षरता तथा संख्यात्मक ज्ञान पर विशेष फोकस किया गया। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए भारत के शिक्षामंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने 5 जुलाई 1921 को 'निपुण भारत मिशन' की शुरूआत किया।

NIPUN (National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy ) इसमें प्री–स्कूल से कक्षा–2 तक, 3 से 8 वर्ष के बच्चों को मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान के सार्वभौमिक अर्जन को सुनिश्चित किया जा सके, जिसे प्रत्येक बच्चा कक्षा–2 के बाद पठन, लेखन और संख्या ज्ञान कौशल की अपेक्षित शिक्षण क्षमता को प्राप्त कर सके।

**अध्ययन की पृष्ठभूमि–**

शिक्षा क्षेत्र में मंजिल ही रास्ता तय करती है, लक्ष्य ही साधन निर्धारित करते हैं, उपयुक्त शिक्षा प्रणाली तभी पनप सकती है जब शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के लक्ष्य निर्धारित हो। शिक्षा का लक्ष्य दिन–प्रतिदिन के जीवन की सच्चाइयों से ही उभरती है। समाज को बच्चों की जरूरतों के बारे में उतना ही चिंतित होना चाहिए, जितना उनकी भलाई में, अगर कोई समाज सिर्फ इस बात पर बल देता है कि शिक्षित वर्ग से लाभ कैसे कमायें तो नतीजा दोनों के लिए अनर्थकारी होगा। समाज शिक्षा के जो लक्ष्य बनाता है, उनका ताल–मेल व्यक्तिगत आवश्यकताओं और समाज के उद्देश्यपूर्ति हेतु होना चाहिए।

गौतम कुमार

शिक्षा के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बुनियादी शिक्षा जिसमें, भाषा और गणित की जानकारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसके जाने बिना आगामी शिक्षा की प्राप्ति नही हो सकती, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण आयु 3 से 8 वर्ष तक के लिए महत्वपूर्ण है जिसमें बच्चे का 85 प्रतिशत मस्तिष्क का विकास हो जाता है। बच्चे के बुनियादी भाषा और गणित की जानकारी होगी तो उसके लिए आगे की शिक्षा आसान होगी।

कल्याणकारी उद्देश्य प्राप्ति हेतु भारतीय शिक्षा को तीन अभिकरणों में बाँट सकते हैं।

1. **अनौपचारी अभिकरण–** अनौपचारिक अभिकरण का प्रारम्भ 1979 में 6–14 वर्ष के बच्चों को ध्यान में रखकर बनाया गया, ये अनिवार्य शिक्षा की परिधि में आते हैं, जो अनेक कारणों से विद्यालय नहीं जा सके।
2. **औपचारिकेत्तर शिक्षा अभिकरण–** इसमें शिक्षा किसी निश्चित स्थान और समय पर नहीं दी जाती है। इसमें अपने आस–पास वातावरण से कुछ सीखता है, परिवार, समाज, राज्य से परिवार का स्थान महत्वपूर्ण होता है। यहाँ सिद्धान्तों या पाठ्यक्रमों का दर्शन नहीं होता है। माता को भारतीय साहित्य में आदिगुरू कहा गया है।
3. **औपचारिक अभिकरण–** इसमें संस्था व संगठन जो नियमानुसार संगठित होते हैं, शिक्षा प्रक्रिया नियोजित ढंग से चलती है। निश्चित पाठ्यक्रम द्वारा निश्चित विधि से पढ़ते हैं। कोठारी आयोग (1964) में कहा है कि –भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है।

**औपचारिक शिक्षा के तीन स्तर होते है–**

(1) **प्राथमिक स्तर–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार 6 से 14 वर्ष आयु के बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक शिक्षा प्राथमिक और उच्च प्राथमिक के अन्तर्गत आते हैं।

(2) **माध्यमिक स्तर–** माध्यमिक स्तर में कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा आती है। इसका उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास, व्यक्तित्व का सर्वांगणी विकास, व्यावसायिक कुशलता का विकास, नेतृत्व शक्ति का विकास होता है।

(3) **उच्च शिक्षा सतर–** इसमें 10+2 के बाद उच्च शिक्षा शुरू होती है जो अनेक वर्गों में कला, वाणिज्य, विज्ञान, कृषि, विधि, आर्युविज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन आदि क्षेत्र आते हैं।

उपर्युक्त तीनों स्तर में प्राथमिक स्तर शिक्षा सभी स्तरों का आधार स्तम्भ है, जिसके उपलब्धता के अभाव के अभाव में आगे की शिक्षा प्राप्ति में कठिनाई होगी। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक किया गया तथा शिक्षा को अनिवार्य और निःशुल्क बनाया गया। इसके लिए निम्न प्रावधान किये गये–

**शिक्षा का अधिकार अधिनियम–**

वर्ष 2002 में 86वें संविधान संशोधन के भाग–3 अनु0 21ए में 6–14 वर्ष के बालकों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया गया।

**शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 की विशेषताएँ–**

1. 1 अप्रैल 2010 से लागू कानून के तहत 6 से 14 वर्ष के बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा प्राप्ति का अधिकार।

2. गैर अल्पसंख्यक तथा गैर सहायता प्राप्त स्कूल आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित पृष्ठभूमि बच्चों को प्रवेश हेतु 25% सीटें आरक्षित।

3. छात्र–शिक्ष अनुपात, भवन, बुनियादी ढाँचा, स्कूल कार्य दिवस, शिक्षकों हेतु कार्यावधि, मानदण्डों और मानकों का प्रावधान किया गया।

4. शत–प्रतिशत कक्षा 8 में बच्चों को उत्तीर्ण करना अनिवार्य बनाया गया, नामांकन शत–प्रतिशत विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति को जोर दिया गया।

**अनु0 45**–राज्य सभी बच्चों को 6 वर्ष की आयु पूरी करने तक प्रारम्भिक बाल्यावस्था व देखभाल और शिक्षा प्रदान करेगा।

**अनु0–51ए–** इसमें 6 से 14 वर्ष के बच्चों के माता–पिता व संरक्षक को अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के अवसर उपलब्ध कराने का कर्तव्य प्रदान किया गया।

भारत में शिक्षा के सुधार पर विभिन्न आयोगों का गठन किया गया–

अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षा परिषद (1957), कोठारी आयोग (1964), भारतीय शिक्षा नीति (1974), आरम विद्यालय (1974), निरोपचारिक शिक्षा नीति (1979), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), आपरेशन ब्लैक बोर्ड (1987), बेसिक शिक्षा योजना आयोग (1989), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (1994), मध्यान्ह भोजन योजना (1995), सर्व शिक्षा अभियान (2001), शिक्षा गारन्टी योजना (2001)।

**नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–** कस्तूरीरंगन कमेटी की सिफारिश पर लाया गया। इसमें शिक्षा को चार भागों में बाँटा गया 5+3+3+4

4–कक्षा 9 से 12 तक आयु–14 से 18 वर्ष–संकेण्ड्री स्टेज

+

3– कक्षा 6 से 8 तक आयु 14 से 11 वर्ष– मिडिल स्कूल स्टेज

+

3– कक्षा 3 से 5 तक आयु 8 से 11 वर्ष– प्रीपरेटरी स्टेज

+

5–2 साल–प्राथमिक स्कूल कक्षा 1 से 2 तक आयु 3 से 8 वर्ष }
3 साल– आंगनबाड़ी + प्री स्कल } फाउण्डेशन स्कूल

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025–26 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना सीखने की बुनियादी आवश्यकता (मूलभूत स्तर पर पढ़ना, लिखना, अंगगणित) को हासिल करने हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना करने की बात किया। इसी का संदर्भ लेते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 5 जुलाई 2021 को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान हेतु निपुण भारत मिशन की शुरूआत किया।

## निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्य–

### बाल वाटिक आयु 5–6

| | | |
|---|---|---|
| मौखिक भाषा | 1. | दोस्तों और शिक्षकों से बात करना। |
| | 2. | समझ के साथ तुकांत/कविताएं गाना। |
| पढ़ना | 1. | किताबों को देखना और चित्रों की मदद से कहानी पढ़ने का प्रयास करना। |
| | 2. | आत्म अभिव्यक्ति के लिए पेंसिल घसिटना या चित्र बनाना। |
| | 3. | पेंसिल को ठीक से पकड़ना और पहचाने योग्य अक्षर बनाने के लिए उपयोग करना। |
| | 4. | अपने नाम के पहले शब्द को पहचानना और लिखना। |
| संख्यात्मक | 1. | वस्तुओं की गिनती और 10 तक की संख्याओं से सह सम्बन्ध स्थापित करना। |
| | 2. | 10 तक के अंको को पहचानना और पढ़ना। |
| | 3. | वस्तु की संख्या के सन्दर्भ में दो समूहों की तुलना करना और अधिक/कम/बराबर आदि जैसे शब्दों का उपयोग करना। |
| | 4. | एक क्रम में घटनाओं की संख्या/वस्तुओं/आकृतियों/घटनाओं को व्यवस्थित करना। |
| | 5. | वस्तुओं को उनकी अवलोकनीय विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत करना। और वर्गीकरण के मानदण्ड का संचार करना। |
| | 6. | अपने आपसपास की विभिन्न वस्तुओं के सन्दर्भ में तुलानात्मक शब्दों का उपयोग करना जैसे लम्बे, सबसे लम्बे, सबसे छोटे, से अधिक हल्के आदि। |

### कक्षा–1 आयु 6–7

| | | |
|---|---|---|
| मौखिक भाषा | 1. | अपनी आवश्यकताओं, परिचित व्यक्तियों एवं परिवेश के बारे में मित्रों, कक्षा शिक्षक के साथ बातचीत करना और प्रश्न करना। |
| | 2. | कक्षा, विद्यालय और परिवेश में उपलब्ध प्रिंट सामग्री एवं इसकी विषयवस्तु पर बातचीत करना। |
| | 3. | कविताओं एवं गीतों को हाव–भाव के साथ सुनाना, |
| पढ़ना | 1. | कहानी सुनाने के सत्र के दौरान सक्रिय रूप से प्रतिभाग करना तथा कहानी सत्र के दौरान एवं पश्चात प्रश्नों का उत्तर देना तथा कठपुतलियों या अन्य सामग्री का प्रयोग करते हुए परिचित कहानी का अभिनय करना। |
| | 2. | नये शब्द पढ़ने के लिए संगत ध्वनि का उपयोग करना। |
| | 3. | आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ में से कम से कम चार–पॉच सरल शब्द सही कर छोटे–छोटे वाक्य पढ़ना। |
| लेखन | 1. | परिचित सन्दर्भो (कहानी/कविता/पर्यावरण सम्बन्धी प्रिंट आदि) में प्रयोग होने वाले शब्दों में मात्राओं के साथ परिचित होना। |
| | 2. | लिखकर या चित्र बनाकर अर्थ समझाना, अपने कार्य पत्रक में नाम लिखना, पहचानने योग्य वस्तुओं /व्यक्तियों का चित्र बनाना। |
| | 3. | शुद्ध वर्तनी युक्त शब्दों के लेखन के साथ–साथ ध्वनि संकेतों का प्रयोग करना। |

| | | |
|---|---|---|
| | 4. | समझ के साथ दो से तीन वाक्य लिखना। |
| संख्यात्मक | 1 | 20 तक वस्तुओं की गिनती एवं संख्या पहचानना। |
| | 2 | अपने परिवेश, आकृतियों और संख्याओं में सरल पैटर्न की पहचान करना एवं आगे बढ़ाना। |
| | 3. | दैनिक जीवन की स्थितियों में 9 तक की संख्याओं तक जोड़ व घटाव का उपयोग करना। |
| | 4. | अपने परिवेश में 3डी0 (ठोस आकृतियां) के भौतिक गुणों का अवलोकन और वर्णन करना जैसे गोल, समतल, सतह, कोने, किनारे |
| | 5. | अमानक और असमान आकृतियां जैसे हाथ, पैर, उगुलियों आदि का प्रयोग करके लम्बाई का अनुमान लगाना, तथा धारिता का मापन करना। |
| | 6. | 20 रूपये तक की भारतीय मुद्रा (नोट एवं सिक्के) पहचानना। |

## कक्षा–2 आयु 7–8

| | | |
|---|---|---|
| मौखिक भाषा | 1. | कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्री पर बातचीत एवं चर्चा करना। |
| | 2. | प्रश्न पूछने एवं दूसरों की बात सुनने के लिए बातचीत में सम्मिलित होना। |
| | 3. | हाव–भाव एवं उतार–चढ़ाव के साथ गीत एवं कविताएं सुनाना। |
| | 4. | कहानियों, कविताओं, प्रिंट आदि में आने वाले परिचित शब्दों को दोहराना। |
| पढ़ना | 1. | बच्चों के साहित्य एवं पाठ्य पुस्तकों से कहानियों को पढ़ना/वर्णन करना/फिर से सुनाना। |
| | 2. | किसी दिये गये शब्द के अक्षरों से नये सार्थक सरल शब्द बनाना। |
| | 3. | सरल शब्दों से युक्त 6 से 8 वाक्यों के आयु उपयुक्त अज्ञात पाठ को बोध, स्पष्टता और प्रवाह के साथ पढ़ना। |
| लेखन | 1. | स्वयं के समझ एवं भावनाओं को व्यक्त करने के लिए छोटे/सरल वाक्यों को सही ढंग से लिखना। |
| | 2. | पठनीय लेखन के साथ 4 से 5 छोटे वाक्य लिखना। |
| संख्यात्मक | 1 | 99 तक की संख्याओं को गिनना और संख्या बोध होना। |
| | 2. | विभिन्न आकृतियों एवं संख्याओं से नये पैटर्न बनाना। |
| | 3. | दैनिक जीवन की स्थितियों में 99 तक की संख्याओं का जोड़ एवं घटाव करना। |
| | 4. | गुणा को सरल जोड़ एवं भाग को समान वितरण/बॅटवारे के रूप में हल करना तथा 2, 3, 4 के गुणन तथ्यों का निर्माण करना। |
| | 5. | आयत, त्रिभुज, वृत्त, अण्डाकार आदि जैसे 2डी आकृतियों की पहचान करना एवं उनका वर्णन करना। |
| | 6. | अमानत समान ईकाई जैसे राड, पेंसिल, धागा का उपयोग करके लम्बाई दूरी का अनुमान लगाना, मापन तथा तराजू का उपयोग करके वजन की तुलना करना। |
| | 7. | दूर/पास/अन्दर/बाहर/ऊपर/नीचे, बाएं/दाएं/आगे/पीछे जैसे स्थानिक शब्दावली का प्रयोग करना। |
| | 8. | 100 रूपये तक की मुद्रा के प्रयोग से सरल लेन–देन करना। |

**पूर्व अध्ययन/शोध के विकास की स्थिति–** निपुण भारत मिशन क्रियान्वयन की वस्तु स्थितिः एक अध्ययन विषय पर अभी तक कोई ज्ञात शोध कार्य नहीं हुआ है। क्योंकि इस मिशन की शुरूआत 05.07.2021 को हुआ है। अपितु विभिन्न एन0जी0ओ0 जैसे, एल0एल0एफ0 जैसी संस्था ने बच्चों का निपुण लक्ष्य प्राप्ति का एक आकलन/सर्वे किया है।

**अध्ययन की सार्थकता–**

इस विषय के अध्ययन से हमें यह पता चलेगा कि, निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति क्या है? निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत बाल वाटिका से कक्षा 2 तक के बच्चे तथा 3 से 8 वर्ष के बच्चं के लिए बुनियादी साक्षरता व अंकगणितीय ज्ञान हेतु जो लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं उनके लक्ष्य प्राप्ति की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना। तथा उसके क्रियान्वयन में विभिन्न स्तर पर होने वाले समस्याओं जैस– प्रशासनिक, एकादमिक, वित्त, विद्यालयी, शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षण तथा विद्यार्थी व अभिभावक व बच्चे के परवेशीय वातावरण का प्रभाव जान सकेगें। तथा इस मिशन के क्रियान्वयन में विभिन्न एन0जी0ओ0 की भूमिका जान सकेगें, तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को भी जान सकेगे।

**अनुसंधान प्रश्न–**

1. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत बुनियाद साक्षरता की वस्तुस्थिति क्या है?
2. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत संख्यात्मक ज्ञान की वस्तुस्थिति क्या है?

3. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, सामाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की वस्तुस्थिति क्या है?

4. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निपुण लक्ष्य प्राप्ति की वस्तुस्थिति क्या है?

5. जिला, ब्लाक, विद्यालय स्तर पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति क्या है?

6. विद्यालय अवस्थिति एवं विद्यालय वातावरण के आधार पर निपुण भारत मिशन की वस्तुस्थिति क्या है?

7. निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन में आने वाली विभिन्न समस्याएं क्या हैं?

**समस्या कथन–**

निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति : एक अध्ययन

**महत्वपूर्ण पदों/प्रत्ययों की कार्यात्मक परिभाषा–**

**1. निपुण भारत मिशन :** मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के द्वारा संचालित निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को विकसित करने के लिए आई0सी0टी0, टी0एल0एम0, अध्यापक प्रशिक्षण व आधारशीला क्रियान्वयन संदर्शिका के माध्यम से बच्चों के पढ़ाई में प्रवीणता लाने की एक व्यवस्थित योजना है।

**2. बुनियादी साक्षरता :** इसमें बाल वाटिका से कक्षा 2 तक के बच्चों में जैसे– बाल वाटिका में अक्षर व ध्वनि पहचान कराना तथा कक्षा 1 में बच्चों को छोटे वाक्य अर्थ के साथ पढ़ लें, तथा कक्षा 2 के बच्चे 45–60 शब्द प्रति मिनट प्रवाह अर्थ के साथ पढ़ लेना ही बुनियादी साक्षरता है।

**3. संख्यात्मक ज्ञान :** इसमें बाल वाटिका से कक्षा 2 के बच्चों में जैसे– बाल वाटिका के बच्चे 0–10 तक की संख्याएं पहचानना व लिख लेते हैं, कक्षा 1 के बच्चे 99 तक की सख्याए पढ़ लेते हैं, जोड़ लेते हैं, घटा लेते हैं, कक्षा 2 के बच्चे 999 तक की संख्या पढ़ना, जोड़ना, घटाना तथा सरल गुणा करना संख्यात्मक ज्ञान है।

**अध्ययन के उद्देश्य–**

1. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्य बुनियादी साक्षरता के वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
2. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर बुनियादी साक्षरता का अध्ययन करना।
3. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्य संख्यात्मक ज्ञान की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
4. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान का अध्ययन करना।
5. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निपुण लक्ष्य प्राप्ति की वस्तुस्थिति का अध्ययन करना।
6. जिला, ब्लाक, विद्यालय स्तर पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की अध्ययन करना।

7. विद्यालय अवस्थिति एवं विद्यालय वातावरण के आधार पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्चन की वस्तुस्थिति अध्ययन करना।

8. निपुण भारत मिशन के क्रियान्चयन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का पता लगाना।

9. विद्यालयी अवस्थिति एवं विद्यालयी वातावरण के आधार पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्चयन में आने वाले विभिन्न समस्याओं का पता लगाना।

10. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत निपुण लक्ष्य प्राप्ति का अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ–**

1. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत बच्चों को निर्धारित लक्ष्य बुनियादी साक्षरता का ज्ञान है।

2. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर बुनियादी साक्षरता में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. निपुण भारत मिशन के अन्तर्गत बच्चों को निर्धारित लक्ष्य, संख्यात्मक ज्ञान है।

4. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के

आधार पर निपुण भारत मिशन के लक्ष्य संख्यात्मक ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है।

5. निपुण भारत मिशन के निपुण लक्ष्य प्राप्ति की वस्तुस्थिति अच्छी है।
6. लिंग, आवासीय पृष्ठभूमि विद्यालयी वातावरण, समाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक समवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय के आधार पर निपुण लक्ष्य प्राप्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
7. जिला, ब्लाक एवं विद्यालय स्तर पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति बेहतर है।
8. विद्यालय वस्तुस्थिति एवं विद्यालयी वातारण के आधार पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति में सार्थक अन्तर नहीं है।
9. निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन में विभिन्न समस्याएं होती हैं।
10. विद्यालयी अवस्थिति एवं विद्यालयी वातावरण के आधार पर निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अनुसंधान विधि–**

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

**अनुसंधान प्रकृति–**

1. मात्रात्मक 2. गुणात्मक

**अनुसंधान में प्रयुक्त चर–**

**1. स्वतंत्र चर**

1. निपुण भारत मिशन का क्रियान्वयन 2. निपुण भारत मिशन की वस्तुस्थिति

गौतम कुमार

**2. वाह्य चर**–लिंग, आवसीय पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक आर्थिक स्तर, सामाजिक संवर्ग, अभिभावक का शैक्षिक स्तर, अभिभावक का व्यवसाय।

**जनसंख्या**– वाराणसी मण्डल के बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक व कम्पोजिट विद्यालय के अध्यापक, बच्चे, अभिभावक व अन्य प्रशासनिक अधिकारी जनसंख्या के अन्तर्गत आते हैं।

**न्यादर्श एवं न्यादर्शन प्रविधि–**

वाराणसी मण्डल के 4 जिले 12 ब्लाक 96 स्कूल के 1920 बच्चे, 300 अध्यापक, 500 अभिभावक व 20 प्रशासनिक अधिकारी के न्यादर्श के रूप में लिया जायेगा। गुच्छ यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि के माध्यम से ऑकड़ों का संकलन किया जायेगा।

**उपकरण–**

बुनियादी साक्षरता, संख्यात्मक, सामाजिक आर्थिक स्तर, विद्यालयी वातावरण, निपुण भारत मिशन के क्रियान्वयन, निपुण भारत मिशन समस्या के मापन के लिए विभिन्न प्रकार की प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

**सांख्यिकी विधि–**

ऑकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, t-परीक्षण व प्रसरण विश्लेषण व अन्य उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

**अध्ययन की परिसीमाएँ–**

प्रस्तुत अध्ययन का परिसीमन उत्तर प्रदेश के वाराणसी मण्डल के 4 जिले, 12 ब्लाक के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित प्राथमिक व कम्पोजिट विद्यालय तक सीमित है।

गौतमकुमार

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–


1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, *नई शिक्षा नीति–2020*
2. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, *शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार का डाक्यूमेन्ट राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल* (निपुण भारत) विवरणिका।
3. *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद का नेशनल कैरिकुल फ्रेमवर्क* 2005।
4. एन0सी0ई0आर0टी0 (2012): *''नेशनल एचीवमेन्ट सर्वे क्लाज–V''*, (नई दिल्ली नेशनल काउंसिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग)
5. गुप्ता, एस0पी0 (2021) *''अनुसंधान संदर्शिका संप्रत्यय कार्यविधि एवं प्राविधि,''* इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन पबिल्शर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूर।
6. गुड, सी0सी0 एंड स्केट्स, सी0ई0 (1954), *''मेथड्स ऑफ रिसर्च''*, न्यूयार्कः अप्पलेटोन कन्ट्री क्राफ्ट्स वेस्ट।
7. कौल, एल0 (2011) : *''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली''*, नई दिल्ली, विकास प्रब्लिकेशन।
8. कार्लिंगर, एफ0एन0 (1973) : *''फाउण्डेशन ऑफ बीहैवियरल रिसर्च''* (II इंडियन रिप्रिंट), नई दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेशन।